RNI No.: DEL/BIL/2004/14598

Youngster

YOUNGSTER · ESTABLISHED 2004 · NEW DELHI · APRIL 2020 · PAGES 4 · PRICE 1/- · MONTHLY BILINGUAL (HIN./ENG.)

कश्मीर में पहले से मुश्किल झेल रहे पर्यटन क्षेत्र का संकट कोरोना वायरस ने और बढ़ाया

कहा जाता है कि अच्छे और बुरे दिन दुनिया में आते–जाते रहते हैं, लेकिन दुर्भाग्यपूर्ण बात है कि दुनिया की कुछ बड़ी महाशक्तियां सम्पूर्ण मानव जाति के हितों का सौदा अपने तुच्छ निजी स्वार्थों के लिये कर बैठती हैं। कोरोना वायरस के इस दौर में अमेरिका और चीन के बीच जो जुबानी जंग चल रही है, वह इसका सबसे ताजा उदाहरण है। यह महामारी सबसे पहले चीन के वुहान शहर में फैली और इसी आधार पर अमेरिका ने इसके वायरस को वुहान वायरस का नाम दे दिया। भले ही चीन ने इस पर नाराजगी जाहिर की हो, तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त की हो और अपने को निर्दोष साबित करते हुए उसने कोरोना महामारी के लिये अमेरिका को दोषी ठहराने की भी कोशिश की है। लेकिन यह एक बड़ा सत्य है कि बड़ी शक्तियां अब हथियारों एवं परमाणु विस्फोटों से दुनिया को तबाह करने की बजाय अब तरह–तरह के नए कीटाणुओं, जीवाणुओं और वायरस इजाद करने में जुटी हैं, जो मानव जाति के लिये गंभीर खतरा है और कोरोना वायरस ऐसा ही क्रूर, विनाशकारी एवं विध्वंसक वायरस है, अब जब इसने महामारी का रूप लिया तो लोगों ने चार दशक पहले लिखी गई डीन कूंटज की किताब द आईज ऑफ डार्कनेस खोज निकाली, जिसमें यह दावा किया गया था कि चीन जीवाणु युद्ध के लिए वुहान में वायरस विकसित कर रहा है। इस किताब में इस वायरस को वुहान–400 का नाम दिया गया था। अमेरिका द्वारा दिया गया नाम वुहान वायरस बहुत से लोगों को इसी ओर इशारा करता हुआ दिखा। चीन दुनिया में अपना वर्चस्व स्थापित करने के लिये इस वायरस से जीवाणु युद्ध चाहता था, लेकिन दुर्भाग्य से दुनिया इस महामारी से तबाह होती, उससे पहले चीन इसका शिकार हो गया। चूंकि अब यह वायरस समूची दुनिया में फैल चुका है, तो भारत भी उसकी चपेट में है, उसकी चिंताएं भारत से ही जुड़ी नहीं हैं, बल्कि विश्व–व्यापी हो गई हैं और इस समय सिर्फ कोरोना की वजह सम्पूर्ण मानव जाति विनाश के कगार पर पहुंच गयी है और इसकी आशंका से आर्थिक मंदी ही नहीं, बल्कि जन–जीवन ठप्प है, भारत में स्कूल, कॉलेज, सिनेमा हाल 31 मार्च 2020 तक बन्द कर दिये गये हैं, सार्वजनिक कार्यक्रम भी प्रभावित है। कोरोना वायरस के भय एवं आशंकाओं का असर केवल शेयर बाजार पर ही नहीं, यह भय दूसरे बाजारों एवं जीवन में भी दिखने लगा है, इन विनाशकारी स्थितियों में भी इंसान कितना अनैतिक एवं स्वार्थी बना हुआ है कि सैनेटाइजर से लेकर मास्क तक की वायरस से लड़ने के साधनों की वह कालाबाजारी कर रहा है। जब जीवन ही नहीं रहेगा तो यह कालाबाजारी का धन क्या काम आयेगा ?कोरोना वायरस को परास्त करने के लिये हर इंसान को पहले इंसान बनना होगा, तभी वह इस भय को मात देने की क्षमता अर्जित कर सकेगा। एक भयभीत एवं लालची समाज किसी भी दुश्मन को शिकस्त नहीं दे सकता, चाहे वह दुश्मन कोई महामारी ही क्यों न हो। पहली जरूरत यह है कि भय को भगाया जाए, जागरूकता फैलाई जाए, इंसानियत का चोला पहना जाये। किसी महामारी को मात देने के लिए बुद्धि से ज्यादा विवेक कारगर हथियार साबित होते हैं। बुद्धि जितनी प्रखर और तेज होगी उतना भय बढ़ेगा। बुद्धि का काम भय को मिटाना नहीं है। उसका काम है नए–नए भयों को उत्पन्न करना। कोरोना वायरस में यही सब देखने को मिल रहा है। इसे भी पढ़ेंरू कोरोना के महामारी घोषित होने से क्या असर पड़ेगा ?क्या कहता है महामारी अधिनियम 1897 यह संकट का समय है, महामारी को परास्त करने के लिये संगठित एवं ईमानदार प्रयत्न करने होंगे। यह समय हाथ पर हाथ धर कर बैठने का समय नहीं है। कोरोना वायरस जैसी महामारियां एक बार जब फैलना शुरू करती हैं, तो रातोंरात परेशानियों को कई गुना बढ़ा देती हैं। इसे ऐसे समझ सकते हैं कि पिछले महीने के अंत में इटली में कोरोना वायरस के 600 मरीज थे, लेकिन सिर्फ दस दिनों के अंतराल में ही यह संख्या बढ़कर दस हजार से अधिक हो गई और रातोंरात इटली उन देशों में गिना जाने लगा, जहां कोरोना का आतंक सबसे ज्यादा है। खुद भारत में भी सबसे ज्यादा संक्रमित लोग वहीं से आए हैं। अभी जो स्थिति है, उसमें भारत की तैयारियां संतोषजनक दिख रही हैं, लेकिन हमें भविष्य की आशंकाओं को देखते हुए भी अभी से तैयारी करनी होगी और प्रभावी कदम उठाने होंगे। भले ही हमारे देश में कोरोना प्रभावित लोगों की संख्या चिन्ताजनक नहीं है, फिर भी हमारे देश में भी एकबारगी यही लगता है कि कोरोना वायरस का भय काफी गहरे तक पैठ गया है। दुनिया के अनेक कोरोना प्रभावित देशों में भारतीय फंसे हैं, सरकार ने फिर एक बार ईरान और अन्य देशों में रहने वाले भारतीयों को वहां से लाने का संकल्प दोहराया है। भारतीय लोगों के जीवन रक्षा के लिये यह समय सरकार के लिये एक बड़ी चुनौती का समय है। भय का एहसास हमारे सारे उत्साह और इस महामारी से लड़ने की ताकत को फीका कर सकता है। कभी–कभार भयभीत सब होते हैं, स्वाभाविक भी है। पर हर समय भयभीत बने रहना अनेक समस्याओं को आमंत्रण देना है। भय की यह चरम पराकाष्ठा बताती है कि सोच, विश्वास, जीवन व काम के स्तर पर बदलाव की जरूरत है। स्वामी विवेकानन्द ने कभी कहा था कि भय से दुःख आते हैं, भय से मृत्यु होती है और भय से ही बुराइयां जन्म लेती हैं।' सिर्फ कोरोना का डर ही बाधक नहीं बनता और भी बाधक बनते हैं। मौत का डर, कष्ट का डर, अनिष्ट का डर, अलाभ का डर, जाने–अनजाने अनेक डर सताने लग जाते हैं, पर जिस व्यक्ति का निश्चित लक्ष्य होता है, ढ़ संकल्प होता है, वह कभी डिगता नहीं और वह कोरोना से लड़ने की क्षमता अर्जित कर लेता है, हमें मिलकर इस वायरस से लड़ना है।

भारत में भयमुक्त वातावरण बनाना जरूरी है। महामारी से जितने लोगों का नुकसान होता है उससे कई गुणा नुकसान भय के कारण होता है। भय एक संवेग है, इमोशन है, एक विति है। भय से ही उपजता है तनाव। यह तनाव आदमी से अकरणीय करवाता है। तनाव में आकर आदमी या तो दूसरे को मार देता है या स्वयं को समाप्त कर लेता है। भारत में कोरोना वायरस के भय से मुक्त वातावरण बनाने के लिए बहुत जरूरी होता है कर्तव्य–बोध और दायित्व–बोध। कर्तव्य की चेतना का जागरण और दायित्व की चेतना का जागरण। क्या यह भय निरंतर सबके सिर पर सवार ही रहेगा ? भयभीत समाज सदा रोगग्रस्त रहता है, वह कभी स्वस्थ नहीं हो सकता। भय सबसे बड़ी बीमारी है। भय तब होता है जब दायित्व और कर्तव्य की चेतना नहीं जगती। जिस समाज में कर्तव्य और दायित्व की चेतना जाग जाती है उसे डरने की जरूरत नहीं होती। ऐसे समाज में कोरोना वायरस निष्प्रभावी ही होगा।

Covid -19

As we all know due to Covid 19 Lockdown has been imposed in India by our Honorable Prime Minister Shri. Narendra Modi. After taking into notice the huge with drawal of migrant workers to their respective villages, the Central government has again issued instructions for proper implementation of the lockdown restrictions and extended the same for next 19 days. This being a favourable move for the wellbeing of people has been accepted by most of the citizens. But, even after the widespread pandemic, which took thousands of innocent lives there are people who are still not following the ongoing lockdown restrictions, violating rules n regulations there by pandering this deadly virus even more.. These people are taking this battle lightly. This is weakening our fight against the coronavirus. Some people think that it is not a remedy for the pandemic and they tend to roam freely and do their routine activities without any fear. These kind of people are exposing not only themselves to the virus but also their loved ones.

In order to make them heed to the lockdown restrictions our police and on-duty officials should arrest those who roam out for no reason and lock them in cells in quarantine for atleast 15 days so that this action causes an extravagant effect on the mentality of the people tending to break the rules. If travelling in a personal vehicle, without any valid or insignificant reason their vehicle should be confiscated then and there along with the driver and fellow members travelling. Only these actions if taken strictly by the police n officials on duty, can lead to a little better situation than what it actually is right now.

We need to wake up to the reality and seriousness of the situation and act responsibly.

In some areas people like policemen, doctors, nurses and staff who are on their job 24×7 by being distant from their families serving for us to stay secured from the virus have life threat not only by being open to the virus but also from some of us.

Recently, ASI Harjit Singh got his right arm parted into two near Vegetable market of Patiala, Punjab just because he was incharge of the barricades and was checking each and every vehicle and was asking the cause of being prone to the virus by being out of their house. Another incident of Moradabad, UP: On 15th April, Doctors, Nurses and staff were under attack just because they had information of a corona virus victim being there and people attacked to stop them from taking the patients to the hospital and the attack was of that extent which injured them critically.

A strict action against criminals have been taken by the CM of UP Shri. Yogi Adityanath kn which the properties and wealth of the criminals will be forfeited as the compensation.

At last, the only thing to look upon is that this lockdown will only be successful when people will follow their duties rather than going out in groups and breaking rules. This is clearly an act against the country's well-being and we need to take this seriously.

बड़ी शक्तियां अब वायरसों के जरिये मानव जाति के लिए खतरा पैदा कर रही हैं

इस बात में बड़ी सच्चाई है कि सबसे बुरा वह रोग होता है, जो आपको भीतर तक भयभीत एवं असुरक्षित कर देता है। असुरक्षा का भाव एवं भय बहुत खतरनाक चीज है। इन दिनों यह भय एवं भाव सम्पूर्ण दुनिया में व्याप्त है, सम्पूर्ण मानव जाति के लिये गंभीर खतरा बन गया है, उसे तबाह कर रहा है। इस भय एवं असुरक्षा के भाव का कारण है कोरोना वायरस।

81 भारतीयों के कोरोना वायरस से संक्रमित होने की खबर आई है। दिल्ली में कोरोना से एक महिला की मौत की खबर भी है। ये सारे वे लोग थे, जो अपनी विदेश यात्रा या विदेश प्रवास के दौरान इस वायरस के संपर्क में आए और उनके साथ ही यह महामारी इस देश में आ गई और जीवन में अनेक संकटों का कारण बन गयी।

THIS MONTH

August 19, 1991 - Soviet hard-line Communists staged a coup, temporarily removing Mikhail Gorbachev from power. The coup failed within 72 hours as democratic reformer Boris Yeltsin rallied the Russian people. Yeltsin then became the leading power in the country. The Communist Party was soon banned and by December the Soviet Union itself disintegrated.

•••

August 19, 1934 - In Germany, a plebiscite was held in which 89.9 percent of German voters approved granting Chancellor Adolf Hitler additional powers, including the office of president.

•••

August 17, 1998- Bill Clinton became the first sitting President to give testimony before a grand jury in which he, the President, was the focus of the investigation. This resulted from a sweeping investigation of the President by Independent Counsel Ken Starr as well as a private lawsuit concerning alleged sexual harassment by Clinton before he became President. In the evening, President Clinton appeared on national television and gave a speech admitting he had engaged in an improper relationship with former White House intern Monica Lewinsky. The admission occurred several months after a much publicized denial.

Compilation:
Honey Shah

BASICS OF MEDIA

Control Room. A room adjacent to the studio in which the director, the technical director, the audio engineer, and sometimes the lighting director perform their various production functions

•••

Master Control . Nerve center for all telecasts. Controls the program input, storage, and retrieval for on-the-air telecasts. Also oversees technical quality of all program material.

•••

Broadband: A high-bandwidth standard for sending information (voice, data, video, and audio) simultaneously over fiber-optic cables

•••

Grayscale: A scale indicating intermediate steps from TV white to TV black. Usually measured with a nine- or seven-step scale.

•••

Demographics: Audience research factors concerned with such data as age, gender, marital status, and income.

•••

Process Message: The message actually received by the viewer in the process of watching a television program.

•••

To Be Continued In Next Issue-

Compilation:
Rahul Mittal

फोर्ब्स पत्रिका में 16 अप्रैल को छपी एक खबर के अनुसार भारत में 15 अप्रैल तक सिर्फ 2,74,599 लोगो की ही कोरोना टेस्टिंग हुई है। 140 करोड़ की आवादी वाले देश में टेस्टिंग के ये संख्या चिन्तित और चकित करने के साथ ही संसाधनों की कमी की तरफ साफ साफ इशारा करती है। ऐसे में सम्पूर्ण लॉकडाउन का रास्ता हमारे लिए विकल्प नही बल्कि हमारी मजबूरी है और अगर हम इसका पालन नही करेंगे तो उसका परिणाम बहुत ही भयभीत करने वाला होगा। सरकार को तुरंत ही ऐसे उपद्रवियों के खिलाफ कड़े कदम उठाने में देरी नही करनी चाहिए जो लॉकडाउन को तोड़ने का प्रयास करते हैं। ऐसे लोगो पर रासुका (राष्ट्रीय सुरक्षा कानून) औरमहामारी एक्ट के अंतर्गत कार्यवाही करने का सरकार का निर्णय पूरी तरह से सही हैं।

.ऋज्ञी

पूरे विश्व में कोरोना वायरस के मामले बढ़ते जा रहे है भारत में अब तक 13,663 कोरोना मामले आए जिनमें से 1,793 लोग ठीक हुए और 450 लोगो मृत्य की हो गई है। इस दौरान डाक्टरों व पुलिसकर्मियों पर पथराव करने जैसी शर्मसार घटना सामने आ रही हैं। उत्तर प्रदेश सरकार ने ऐसी शर्मसार घटनाओं के खिलाफ एक बड़ा कदम उठाया । उत्तर प्रदेश की प्रशासन अब राष्ट्रीय सुरक्षा कानून के तहत ऐसे लोगो पर सख्त कार्रवाई करेगी । कोरोना वायरस तेजी से फैल रहा है और कोरोना फैलने से रोकने का एकमात्र उपाय है ष्लॉकडाउनष्। लॉकडाउन होने के बाद भी लोग घर से बाहर निकाल रहे है और सोशल डिस्टेंसिंग का भी पालन नहीं कर रहे हैं। भारत सहित तमाम देश ने लॉकडाउन का पालन कराने के लिए अलग अलग तरीके अपना रहे है कहीं जुर्माना लगा रहे है तो कहीं केस दर्ज किए जा रहे हैं। डाक्टर और पुलिसकर्मी सभी सोशल मीडिया पर वीडियो डालकर लोगो से घर रहने कि अपील कर रहे है कुछ दिन पहले फिल्म जगत के सुपर स्टार सलमान खान ने भी सोशल वीडियो पर एक वीडियो शेयर की जिसमें उन्होंने बोला ष अगर आपके एक्शन सही होते तो ये लॉकडाउन तो अभी तक खत्म हो गया होता और ये कोरोना वायरस भीष । सलमान खान ने लोगो को समझाया की मिलिट्री लाने की नोबात ना आने दो और लॉकडाउन का पालन करो। ऐसे में लोगो को समझना होगा कि ये जंग सबको मिलकर ही लड़नी है और उनकी एक लॉकडाउन ना पालन करने की गलती पूरे भारत को 21 साल पीछे ले जाएगी ।

निकिता शर्मा , दिल्ली गेट , न्यू दिल्ली

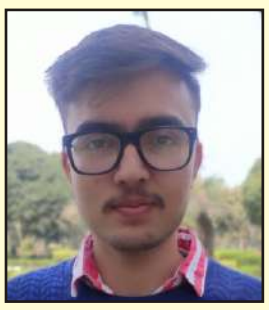

क्या लॉकडाउन तोड़ने वाले लोगों के खिलाफ कार्यवाही की जानी जरूरी है? कोरोना महामारी के चलते कुल मिलाकर 32 राज्य एवं केंद्र शासित प्रदेश अभी लॉकडाउन कीस्थिति में है। यह राज्य एवं केंद्र शासित प्रदेश लगभग 560 जिलों को समेटे हुए हैं। प्रधानमंत्री एवं मुख्यमंत्रियों के द्वारा दिए गए दिशा निर्देशों के बावजूद लोग लगातार लॉकडाउन का पालननहीं कर रहे हैं जिसके चलते चिंता की स्थिति बनी हुई है। जबकि यह सरकार द्वारा स्पष्ट किया जा चुका है कि कोरोना वायरस को रोकने का एकमात्र उपाय लॉकडाउन ही है । अगर स्थिति ऐसी ही बनी रही तो सरकार को मजबूरन सख्त कदम उठाने होंगे। हालांकि हर नाके, गली, मोहल्ले पर पुलिस बल पहरेदारी दे रही है, इसके बावजूद भी लोगों में कोरोना का खौफ कमतर है। अगर इसी प्रकार लोग सरकार के निर्देशों की अवहेलना करती रही तो भारत जल्द ही कोरोना वायरस के तीसरे स्तर की श्रेणी में आ जाएगा जहां से इसका संक्रमण रोकना बहुत ही कठि होगा। इसी के साथ मैं इस बात का समर्थन करता हूं कि लॉकडाउन का पालन नहीं करने वाले लोगों के खिलाफ सख्त कार्यवाही की जानी चाहिए एवं यही एकमात्र उपाय हैं कोरोना जैसी महामारी को फैलने से रोकने के लिए।

विपिन , झज्जर , हरियाणा

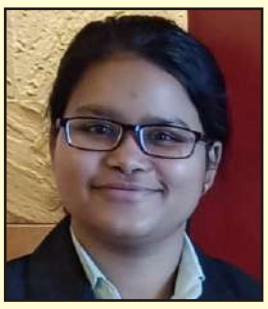

लोकडाउन का पालन न करने वालो पर सख्त कार्रवाई लोकडाउन का पालन न करने वालो पर सख्त कार्रवाई होनी चाहिए। ऐसा करना इसलिए जरूरी है क्योंकि बढ़ती महामारी को काबू में लाने के लिए ऐसा करना अति आवश्यक हैं। उन पर सख्त से सख्त कार्खाई करनी चाहिए।

जैसा कि आप सभी जानते हैं कि लॉकडाउन की अवहेलना करने के आए दिन नए मामलों की खबरें आती रहती हैंद्य देश के कई राज्यों में कोरोना जांच टीम व पुलिस पर हमला होने की खबर के बाद सरकार ने तय किया है कि ऐसे मामले में आरोपियों के खिलाफ नेशनल सिक्योरिटी एक्ट और महामारी एक्ट के तहत कार्रवाई की जाएगी। अब आज ही की खबर के अनुसार कर्नाटक के पूर्व सीएम के बेटे की शादी में उमड़ी भीड़ ने लॉकडाउन के नियमों की धज्जियां उड़ाई हैंद्य अब ऐ से में सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न यह उठता है कि क्या लॉकडाउन का उल्लंघन करने वालों के लिए केवल नियम बनाना ही काफी है या उस नियम को ठीक तरह से पालन करवाने की एक कठोर रणनीति सोचने की आवश्यकता हैद्य भारत की यह एक कमजोर नब्ज है कि यहां नियम तो बन जाते हैं लेकिन कार्यवाही या तो होती नहीं है या बहुत देरी से होती हैद्य भारत सरकार को ऐसे लोगों पर कड़ी से कड़ी कार्यवाही करनी चाहिए अन्यथा ऐसे लोगों की हिम्मत और बढ़ेगी और कुछ लोगों की वजह से पूरे देश को भविष्य में बहुत ही मुश्किल परिस्थितियों का सामना करना पड़ सकता है ।

वंशिका

लॅक डाउन का पालन नहीं करने वालों पर क्या कार्यवाही होनी चाहिए देश में कोरोना महामारी को देखते हुए प्रशासन ने संपूर्ण लॉक डाउन जारी कर रखा है फिर भी ऐसे कई असामाजिक तत्व हैं जिन्हें यह बात हजम नहीं हो रही है। वर्तमान में भारत में संक्रमित लोगों की संख्या 13000 के पार पहुंच गई है तथा कुल मौत 450 दर्ज की जा चुकी है। गौरतलब है कि कोरोना एक ऐसी बीमारी है जो लोगों के संपर्क में आने से फैलती है। सामाजिक दूरी बनाएरखना ही इसका एक मात्र उपाय है। हाल के दिनों में क्या आम क्या खास सभी ने नियमों को ताक पर रखकर अपनी मनमर्जी की है। चाहे वह दिल्ली में जमात का मामला हो या फिर धारावी में लोगों का खुलेआम घूमना। सिर्फ आमजन ही नहीं कई सारे जिम्मेदार राजनेताओं ने भी इस की अवहेलना की है। कर्नाटक के पूर्व सीएम के बेटे की शादी में बहुत ज्यादा भीड़ उमड़ पड़ी। ऐसे हालातों में बल प्रयोग ही प्रशासन के पास इनसे निपटने का एकमात्र साधन रह गया है। यूपी सरकार ने तय किया है कि ऐसे लोगों के खिलाफ राष्ट्रीय सुरक्षा कानून तथा महामारी एक्ट के तहत मामले दर्ज कर कार्यवाही होगी। वर्तमान में हालात बहुत ही संवेदनशील बने हुए हैं ऐसे में जो भी लोग डाउन के नियमों का उल्लंघन करता है, उस पर कड़ी से कड़ी कार्रवाई होनी चाहिए।

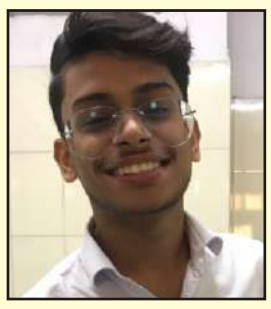

लॉकडाउन का पालन न करने वालों पर क्या करवाई होनी चाहिए? ळर्षित श्रीवास्तव, मुगलसरायरू– देश में लगातार बढ़ते हुए कोरोना मामले को देखते हुए सरकार ने 3 मई तक लॉकडाउन पार्ट–2 लागू किया है। देश में लोगों द्वारा पूर्ण सहयोग मिल रहा है इसे पालन करने का, लेकिन कुछ लोग है जो अपनी हरकतों से बाज नहीं आ रहे है। लॉकडाउन के नियमों का अंधाधुन उलंघन करते हुए पाए जा रहे है। प्रशासन के गाइडलाइंस का अवेहलना कर रहे है, जिसके कारण सरकार ने ऐसे लोगों के खिलाफ कार्रवाई करने के लिए कमर कस ली है। हर राज्य ने इनके खिलाफ करवाई के लिए प्रशासन को निर्देश दिए है कि इनको तुरंत जेल तथा इनको उचित दंड दिया जाए। हालांकि कई देश ने तो इस महामारी से लड़ने के लिए बहुत ही कड़े कदम उठाए है। फिलीपींस ने तो शूट एट साइट का भी आदेशदिया है जो लॉकडाउन तोड़ते हुए पाए जाएंगे। हालांकि सारे देश – विदेश की सरकारों को यह कदम मजबूरी में लेना पड़ा है कि वो इस महामारी से अपने देश को बचा सके। इसलिए उन लोगों पर कार्रवाई करने कि बात सही है, लॉकडाउन से सारे मानव जाती का उद्धार हो पाएगा।

लॉकडाउन का पालन नहीं करने वालों पर क्या कार्यवाही होनी चाहिए

ऋतिक जोशी, गाजियाबाद (उ० प्र०)

इस वायरस की गंभीरता को समझना लोगो का एक मात्र कर्तव्य हैं।

1. सैक्शन 269 के अनुसार लॉकडॉउन का पालन न करने वालो 6 महीने की कारागार की सजा या फिर जुर्माना।
2. सैक्शन 279 के अनुसार 2 साल की सजा और जुर्माना।
3. सेक्शन 188 में 6 महीने की सजा और 1000 का जुर्माना।

ठसके साथ ही कुछ अलग अंदाज में इन्हें दंड भुगतना पड़ेगा। उसमे योगा से लेकर व्यायाम करना आवश्यक हैं।

दिशा जैन

देश में करोना महामारी के चलते लॉकडाउन का ऐलान किया गया है। यह कदम सरकार द्वारा हमारी सुरक्षा के लिए उठाया गया है। पर कुछ लोग ऐसे हैं जो लॉकडाउन का पालन नहीं कर रहे हैं ।जैसे हजारों लोग दिल्ली आनंद विहार बस स्टैंड पर इकट्ठा हुए, निजामुद्दीन मरकज में इकट्ठा हुए, बांद्रा स्टेशन में इकट्ठा हुए दिहाड़ी मजदूर और यमुना किनारे जुटी मजदूरों की भीड़ सब दर्शाता है कि लोग लॉकडाउन को गंभीरता से नहीं ले रहे हैं। ऐसे में लोगों का यह समझना बहुत ही आवश्यक है कि अगर वह लॉकडाउन का पालन नहीं करेंगे तो हमारे देश काहाल भी वैसा ही होगा जैसे आज अन्य देशों का हाल है जहां रोजाना हजारों नए मरीज सामने आ रहे हैं और वहां दिन–प्रतिदिन हालात बिगड़ते जा रहे हैं। लॉकडाउन ही एकमात्र विकल्प है जो हमें इस महामारी को रोकने में सहायता करेगा। जो लोग लॉकडाउन का पालन नहीं कर रहे हैं उन पर सख्त कार्यवाही होनी चाहिए। ऐसे लोगों को जेल की सजा होनी चाहिए,उन पर भारी जुर्माना लगाना चाहिए और उन्हें सोशल डिस्टेंसिंग का मतलब समझाना चाहिए।

––रितिका चावला, रोहिणी, दिल्ली

पूरा विश्व मिलकर महामारी कोविड 19 के खिलाफ एक युद्ध लड़ रहा है और इसके चलते पूरा विश्व नए नए तरीके अपना रहा है हमारे भारत में भी तमाम कदम उठाये गये जिस में लॉकडाउन जैसा एहम कदम उठाया गया। लॉकडाउन की वजह से कोरोना का संक्रमण ओर देशो के मुताबिक काफी हद तक कम हुआ जिसकी चलते भारत में लॉकडाउन की अवधी बढ़ा दी गयी जिसका पालन करना सभी भारत वासियों के लिए अनिवार्य कर दिया गया । ऐसे में कुछ ऐसे मामले भी सामने आये जिसमे लॉकडाउन का पालन नहीं किया गया और लोगो को बहार निकलते पाया गया जिसके चलते पुलिस प्रशासन ने कड़े कदम उठाये और लोगो को सजा भी दी। अब सवाल यह उठता है की लॉकडाउन का पालन न करने वाले के साथ क्या किया जाये लॉकडाउन लोगो की भलाई के लिए ही लगाया गया है अगर वो ही इसका पालन नहीं करेंगे तो इस महामारी से कैसे जीता जायेगा तो यह अब जरुरी हो गया है कि लोग सरकार द्वारा उठाये गये कदम में उनका साथ दे और जो बनाये गए नियमो का पालन न करे उसे पहले प्यार से समझाए और प्यार से न मानने पर उन्हें सख्ती के साथ समझाए ताकि उनकी सुरक्षा का पूरा ध्यान रखा जा सके और सिर्फ आपातकालीन स्तिथि में लोगो को घर से बहार निकलने की अनुमति दी जाये वो भी पूरी सुरक्षा के साथ। इस विपदा के समय हमें मिलकर साथ खड़े रहना है ताकि हम इस महामारी से बच सके।

हिमांषी राघव, बुलंदशहर, उ०पी०

पूरे विश्व में सभी अख बारों और न्यूज चौनलों की हेडलाइन बने कोरोनवायरस नाम से प्रख्यात इस वैश्विक महामारी ने जिस तरह सभी को वर्तमान और भविष्य की गंभीर चिंता में डाल दिया हैं। वहीं भारत में भी प्रतिदिन इस महामारी का बढ़ता दायरा देखकर पूरा देश पिछले1महीने से संपूर्ण लॉकडाउन से गुजर रहा हैं, और हमारी सुरक्षा के लिए 24 घंटे कोरोना वॉरीअर्ज तत्पर हैं, ऐसे में हमारी भी जिम्मेदारी अहम हो जाती हैं मगरफर भी देश में कुछ लोग लोग ऐसे हैं जिनकी मानसिकता समाज के लिए महामारी से भी अधिक ख तरनाक हैं और ऐसे लोगों पर, जो भी लॉकडाउन का उल्लंघन करते हैं या फिर सरकार की मुश्किलें बढ़ाते हैं तो सरकार द्वारा इन पर एपिडेमिक डिजीज ऐक्ट 1897 के तहत कार्यवाही और रासुका (राष्ट्रीय सुरक्षा कानून) लगाना काफी कारगर और सख त साबित होगा।लॉक डाउन का पालन नहीं करने पर होनी चाहिए करवाई कोरोना अपने चरम सीमा पर है ऐसे में जरूरत है की सरकार द्वारा जारी किए गए सभी निर्देशों को अक्षरशः पालन किया जाए । जो कोई इस कानून का पालन नहीं करता है उसके ऊपर उचित कार्यवाही होनी चाहिए । भारत में महामारी कानून 1897 लागू होती है । सरकार ये कानून तब अधिरोपित करती है जब उसे सामान्य प्रावधान के अंतर्गत इस महामारी से निपटने के लिए रास्ता नही दिखता। इस कानून के धारा 6 में लिखा है कि अगर कोई व्यक्ति सरकार के द्वारा तय किये गए नियमों का पालन नहीं करता है तो उसे भारतीय दंड संहिता के धारा 188 के तहत दंडित किया जाएगा। यह कानून 18 वीं सदी में प्लेग से निपटने के लिए बनाया गया था। इस कानून के धारा 4 में लिखा है कि अगर कोई अच्छे नियत से इस कानून का उल्लंघन कर जाता है तो उसके ऊपर कोई कार्यवाही नहीं होगी।

चंदन

अनुसूचित जाति एवं जनजाति अधिनियम का उपयोग या दुरुपयोग

अनुसूचित जाति एवं जनजाति अधिनियम का दुरुपयोग रोकने के लिए सुप्रीम कोर्ट के फैसले के विरोध में 2 अप्रैल को भारत बंद का आह्वान किया गया। इस बंद के दौरान देश–भर में हिंसक प्रदर्शन हुए जिसमे 14 निर्दोष लोगो की मृत्यु हो गई ओर कई सरकारी संपत्तियों को भी काफी नुकसान पहुंचाया गया। ऐसा हिंसक आंदोलन भारत वर्ष के इतिहास में दलित समुदाय के द्वारा पहली बार देखा गया ।

20 मार्च को सर्वोच्च न्यायालय के फैसले में कहा गया कि अनुसूचित जाति एवं जनजाति अधिनियम का दुरुपयोग हो रहा है। यह अपको बता दें कि वर्ष 2016 में एससी/एसटी से जुड़े दायर मामलों में 6 हजार 259 मामले फर्जी पाए गए। न्यायालय ने आपने फैसले में कहा कि जांच रिपोर्ट के बाद F.I.R दर्ज होगी, न्यायालय ने तुरंत गिरफ्तारी पर भी रोक लगाई, नए कानून के मुताबिक अग्रिम जमानत का प्रावधान भी जोड़ा गया।

सर्वोच्च न्यायालय के इस फैसले का विरोध तमाम राजनैतिक पार्टियों ने किया। केंद्र सरकार ने 2 अप्रैल की सुबह न्यायालय में पुनर्विचार याचिका दायर की। जिस पर 3 अप्रैल को सुनवाई के दौरान कोर्ट ने कहा कि न्यायालय अधिनियम के खिलाफ नहीं है न्यायालय ने प्रावधान से कोई छेड़छाड़ नहीं की हैं। न्यायालय ने कहा समानता के अधिकार से कोई वंचित नहीं रहना चाहिए, निर्दोष लोगों के मौलिक अधिकारों की रक्षा करना न्यायालय का फर्ज हैं।

2 अप्रैल को 9 राज्यों में हुई हिंसक घटनाओं में 14 लोगो की मृत्यु हो गई। उत्तर प्रदेश, पंजाब, बिहार, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, राजस्थान में बंद का असर जादा देखने को मिला। उत्तर प्रदेश के मेरठ में पुलिस चौकी ओर मुजफ्फर नगर में पुलिस थाने में प्रदर्शनकारियों ने आगजनी की घटनाओं को अंजाम दिया। वहीं गाजियाबाद में सड़को पर तोड़–फोड़, आधा दर्जन पुलिस कर्मियों को नुकसान पहुंचाया गया , वही हापुड़, फिरोजाबाद, आगरा में भी प्रदर्शनकारियों ने सड़को पर जाम लगाया, प्रदर्शनकारियों ने अलग– अलग जगह पर ट्रेन को रोक कर प्रदर्शन किया।

ऐसी ही घटनाएँ राजस्थान के अलवर, सीकर, जयपुर, जोधपुर में भी देखने को मिली। इन इलाकों में धारा 144 लगाई गई है, इंटरनेट की सेवाएं भी बंद कर दी गई है। इन इलाकों में पुलिस पर पथराव किया गया, रेलवे लाइन को भी बाधित किया, दुकानों एवं गाड़ियों में आग लगाई गई एवं अनेक हिंसक घटनाओं को अंजाम दिया गया। जयपुर के एक शोरूम में प्रदर्शनकारियों ने तोड़ –फोड़ कर दी। शोरूम का शीशा तोड़ दिया। यहां पुलिस की फायरिंग में एक युवक की मौत हो गई।

मध्यप्रदेश के ग्वालियर, भिंड, मुरैना में भी बंद का व्यापक असर देखने को मिला। ग्वालियर में एससी/एसटी प्रोटेक्शन एक्ट को लेकर हो रहे प्रदर्शन के दौरान गोलियां चल गईं। मुरैना में ट्रेन की पटरियां उखाड़ने की कोशिश की गई। बिहार के जहानाबाद, दरभंगा, आरा, अररिया, सहरसा, मधुबनी जिलों में बंद समर्थक रेल पटरियों पर बैठ गए, जिससे रेलों के परिचालन पर भी प्रभाव देखा जा रहा है। बंद समर्थकों ने कई ट्रेनें रोक दी और हंगामा किया। सड़कों पर आगजनी की, जिससे वाहनों को आग के हवाले कर दिया गया। बंद के दौरान अन्य कई राज्यों, जगह पर भी बंद का प्रभाव देखने को मिला। मगर जिन राज्यों में बी जे पी की सरकारे हैं या फिर जहां आने वाले समय में चुनाव होने वाले हैं वहां बंद का ज्यादा असर देखने को मिला। राजस्थान, मध्यप्रदेश में आने वाले समय में चुनाव होने वाले हैं ओर चुनावों के वक्त पार्टियाँ अपने अपने वोट बैंक को भुनाने की कोशिश में लगी रहती हैं। देश की कुल आबादी की 16.6: जनसंख्या दलितों की है और सभी पार्टी इतने बड़े वोट बैंक को अपने हाथ से जाने नहीं दे सकती। वहीं जहां उत्तर प्रदेश, राजस्थान, मध्यप्रदेश, बिहार में हिंसक घटनाएं देखने को मिली जो कि बी जे पी शासित प्रदेश हैं। वही पंजाब में प्रदर्शनकारियों ने आंदोलन शांतिपूर्वक किया।

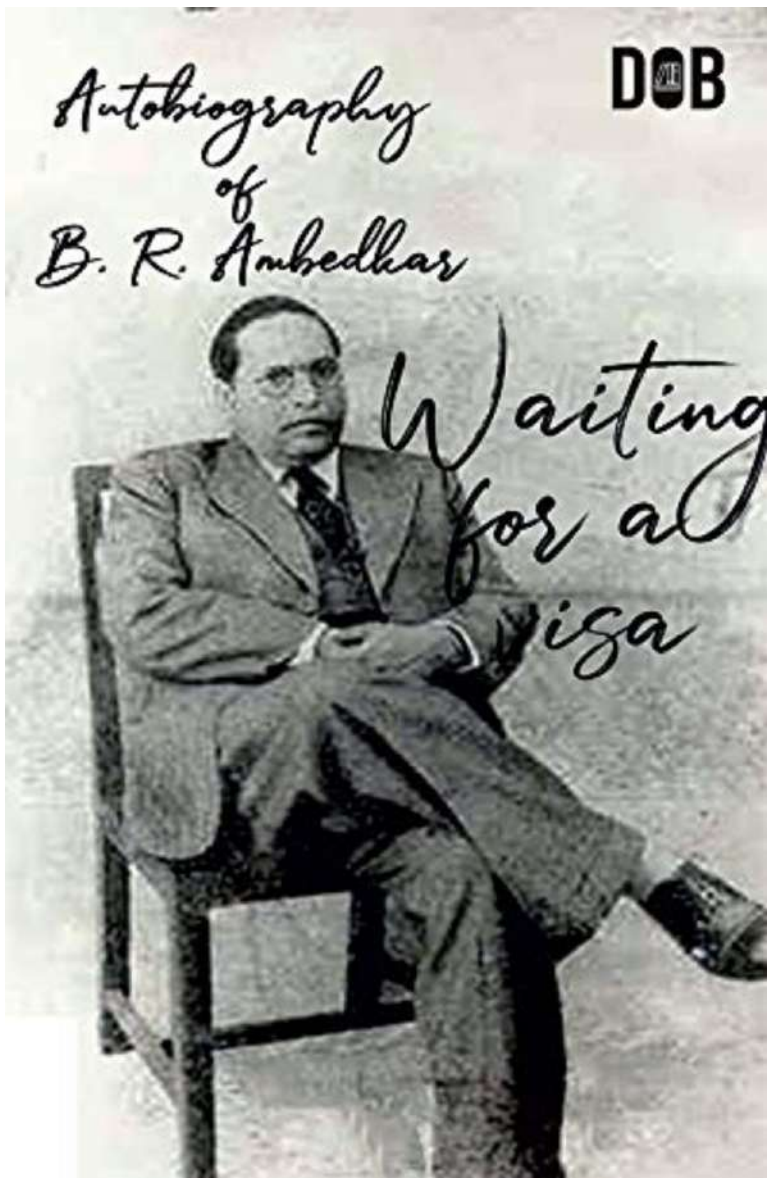

जनसंख्या के प्रतिशत के हिसाब से पंजाब में सबसे ज्यादा दलित हैं। हमारे देश में आंदोलन हमेशा ही राजनीति से प्रेरित होते हैं। चाहे वह जाठ आंदोलन हो या फिर दलित आंदोलन,हर जगह आम जनता को समस्या झेलनी पड़ती हैं, सरकारी संपत्तियों को नुकसान पहुंचाया जाता है एवं यातायात को प्रभावित किया जाता है।

देश को 12 मार्च 2018 में हुए किसान आंदोलन से सीख लेनी चाहिए। महाराष्ट्र में 12 मार्च को बच्चों की परीक्षा थी। बच्चों को परीक्षा केंद्र तक पहुंचने में कोई दिक्कत ना आए इसलिए किसानो ने 11 मार्च की रात्रि को पैदल यात्रा करके सुबह 5 बजे से पहले ही आजाद मैदान पहुंच गए। ना ही किसानों ने कोई उग्र प्रदर्शन किए, ना ही वाहनों में तोड़फोड़ की ओर ना अन्य आम लोगो के काम काज को प्रभावित किया। जिसके फलस्वरूप किसानों ने शांतिपूर्ण तरीके से आंदोलन किया ओर सरकारों को उनकी मांगे माननी पड़ी।

2 अप्रैल को हुए इस भारत बंद की वजह से एक बच्चे ने ऐम्बुलेंस में ही दम तोड़ दिया। उस बच्चे के हत्यारे कौन हैं करणी सेना ने राजस्थान में बच्चों की स्कूल बस में आग लगा दी थी उसी प्रकार कल भी दलित प्रदर्शनकारियों ने कई बसों को आग को हवाले कर दिया था, AIIMS की बस से डॉक्टर और नर्स को निकालकर जबरदस्ती बस में आग लगा दी गई। करणी सेना को तो इस देश के तमाम बुद्धिजीवी,राजनेताओं ने गुंडा कह कर संबोधित किया था अब वो इन प्रदर्शनकारियों को क्या कह कर संबोधित करेंगें ।

उसी तरह जाठ आंदोलन को गुंडागर्दी बताया गया और 2 अप्रैल को हुई घटना को ? क्या आजादी के बाद मिल रहे आरक्षण का आम दलितों को कुछ फायदा हुआ भी है ? क्या 70 वर्ष पश्चात भी वो इतने सक्षम नहीं बन पाये की उन्हे आज भी आरक्षण की बूढ़ी लाठी का सहारा लेना पड़ता है ? क्या उन्हें आरक्षण सिर्फ वोट बैंक का हिस्सा बनाए रखने के लिए दिया गया है ?

– रोहित रावत

SASHAKT: Different Is Special

"Strength does not come from physical capacity. It comes from an indomitable will". Keeping this objective in mind, students of BA(JMC) department of Tecnia Institute Of Advanced Studies, organized an ad campaign, 'SHAKT: Different Is Special' under the guidance of Mr. Bal Krishna Mishra, Asst. Prof. Journalism and Mass Communication, Tecnia on 7th April 2018. The campaign was conducted on the streets of Rohini Sec-14, New Delhi-, covering the college campus, Bal Bharati Public School, Ashtavakra Institute of Rehabilitation Sciences and Research. The main objective behind the campaign was to empower the specially-enabled people by promoting their their work, achievements, and redoubtable efforts. They are the super humans as they can do things perfectly even with their missing capes. They might be physically or mentally changed, but they are the true CHALL-ENGERS. They will challenge you, win the battle, and prove that they are stronger than the able-bodied.Each individual irrespective of caste, colour, gender, and age, was targeted as everyone needs to understand and value the work done by the differently-abled citizens of the society.

- Youngster Bureau

Vol. 16 **No. 4**
RNI No.: DEL/BIL/2004/14598
Publisher: Ram Kailsah Gupta on behalf of Tecnia Institute of Advanced Studies, 3 PSP, Madhuban Chowk, Rohini, Delhi-85; **Printer:** Ramesh Chander Dogra; **Printed at:** Dogra Printing Press, 17/69, Jhan Singh Nagar, Anand Parbat, New Delhi-5
Editor: Rahul Mittal,Bal krishna Mishra responsible for selection of News under PRB Act. All rights reserved.

IMPORTANT QUOTES

"The opposite of a correct statement is a false statement. The opposite of a profound truth may well be another profound truth."

Niels Bohr

•••

"In science one tries to tell people, in such a way as to be understood by everyone, something that no one ever knew before. But in poetry, it's the exact opposite."

Paul Dirac

•••

"Anyone who considers arithmetical methods of producing random digits is, of course, in a state of sin."

John von Neumann

•••

"It is unbecoming for young men to utter maxims."

Aristotle

•••

"Grove giveth and Gates taketh away."

Bob Metcalfe

•••

Compilation:
Priya Kumari

WINNERS v/s LOOSERS Part-90

Winners use hard arguments but soft words; Losers use soft arguments but hard words.

•••

Winners stand firm on values but compromise on petty things; Losers stand firm on petty things but compromise on values.

•••

Winners follow the philosophy of empathy: "Don't do to others what you would, not want them to do to you"; Losers follow the philosophy, "Do it to others before they do it to you."

•••

Winners make it happen; Losers let it happen.

•••

The Winner is always part of the answer; The Loser is always part of the problem.

•••

The Winner always has a program; The Loser always has an excuse.

•••

To Be Continued In Next Issue-

Compilation:
Rahul Mittal

All Students and Faculty are welcome to give any Article, Feature & Write-up along with their Views & Feedback at: **youngstertias@gmail.com**